THE CONCERT OF EUROPE (यूरोप की संयुक्त व्यवस्था)

नेपोलियन ने यूरोप की शान्ति भंग की थी। मित्र राष्ट्रों ने पारस्परिक सहयोग से नेपोलियन को पराजित किया तथा वियना कांग्रेस द्वारा यूरोप की पुनर्व्यवस्था की गयी, परन्तु यूरोप के देश यूरोप में स्थायी शान्ति की स्थापना करना चाहते थे। इसके अतिरिक्त उस समय यूरोप के निरंकुश शासकों को भी परस्पर सहयोग की आवश्यकता थी क्योंकि यूरोप में राष्ट्रवादी भावनाओं एवं प्रजातान्त्रिक सिद्धान्तों का निरन्तर प्रचार हो रहा था।

यूरोप में संयुक्त व्यवस्था की स्थापना का विचार कोई नया नहीं था। इससे पूर्व भी इस प्रकार की भावनाओं को अनेक बार प्रकट किया गया था। 1791 ई० में आस्ट्रिया के प्रधानमंत्री काउन्ट कानिज ने तथा 1804 ई० में रूस के ज़ार एलेक्जेण्डर ने इसी प्रकार के प्रस्ताव रखे थे। 1815 ई० में यूरोप में इंगलैण्ड, आस्ट्रिया तथा रूस भी इसी प्रकार की व्यवस्था स्थापित करने के लिए प्रयत्नशील थे। यूरोप की संयुक्त व्यवस्था हेतु पहले रूस के ज़ार एलेक्जेण्डर ने 'पवित्र संघ' (Holy Alliance) की घोषणा की, तत्पश्चात मेटरनिख एवं कैसलरे ने 'चतुर्मुख मित्रमण्डल (Quadruple Alliance) की घोषणा की। इन दोनों के आधार पर ही यूरोप की संयुक्त व्यवस्था की गयी।

पवित्र संघ (Holy Alliance):- रूस के ज़ार एलेक्जेण्डर द्वारा 26 सितम्बर 1815 ई० को पवित्र संघ की घोषणा की गयी। ज़ार ने कहा कि यह घोषणा प्रत्येक यूरोपीय राजा के लिए थी तथा राजाओं को अपना शासन पवित्र धर्म, न्याय, उदारता एवं शान्ति के सिद्धान्तों पर आधारित करना चाहिये।

इस घोषणा का उद्देश्य यूरोप में शान्ति की स्थापना करना एवं उसे बनाये रखना था। पोप, टर्की के सुल्तान तथा इंगलैण्ड के विदेश मंत्री कैसलरे के अतिरिक्त यूरोप के अन्य राज्यों ने इस घोषणा पत्र पर अपने हस्ताक्षर किये और पवित्र संघ के सदस्य बने। कैसलरे ने इसलिये इसको ~~[illegible]~~ अस्वीकार किया क्योंकि इसे स्वीकार करने पर इंगलैण्ड द्वारा की गई अन्य सन्धियाँ ~~[illegible]~~ प्रभावित होतीं। इंगलैण्ड द्वारा इसे अस्वीकार करने से यह पवित्र संघ सफल न हो सका। आस्ट्रिया एवं मेटरनिख को भी इसमें विश्वास नहीं था किन्तु ज़ार को प्रसन्न करने के लिए इसे स्वीकार कर लिया।

पवित्र संघ का कोई राजनीतिक महत्व तो न था, किन्तु यह ज़ार की दयालुता एवं धार्मिकता का प्रतीक था। 1815 ई० में ज़ार की मृत्यु के साथ ही पवित्र संघ भी समाप्त हो गया।

Ajanta Officer

चतुर्मुखी राष्ट्र संघ (Quadruple Alliance) :-

पवित्र संघ के असफल हो जाने के पश्चात भी यूरोप के राजनीतिज्ञ यूरोप में शान्ति बनाये रखने के लिए किसी उचित व्यवस्था की स्थापना करना चाहते थे। इस उद्देश्य से आस्ट्रिया के प्रधानमंत्री मैटरनिख ने एक योजना प्रस्तुत की जिसे यूरोप की अन्य प्रमुख शक्तियों - इंग्लैण्ड, रूस तथा प्रशा ने स्वीकार किया। इस योजना को क्योंकि चार देशों ने स्वीकार किया, अतः इसे 'चतुर्मुखी राष्ट्र संघ' कहा गया तथा इसके द्वारा स्थापित व्यवस्था को यूरोप की संयुक्त व्यवस्था कहा गया। यह चार राष्ट्रों के मध्य हुई एक संधि थी, जिसके प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित थे -

(i) वियना कांग्रेस के निर्णयों का पालन करना।
(ii) यूरोप की समस्त समस्याओं का समाधान शान्तिपूर्ण एवं पारस्परिक विचार विमर्श के द्वारा करना।
(iii) नेपोलियन तथा उसके वंशजों को फ्रांस के सिंहासन पर बैठने देना।
(iv) समय-समय पर पारस्परिक बैठकों का आयोजन करना।
(v) क्रान्ति के विचारों का सामूहिक रूप से दमन करना।
(vi) यूरोप में शान्ति बनाए रखना।

यूरोप की संयुक्त व्यवस्था 1815 ई० से 1822 ई० तक बनी रही। इंग्लैण्ड का विदेश मंत्री कैसलरे इसका घोर समर्थक था। वह इस व्यवस्था को "शान्ति स्थापना की गारंटी" समझता था। 1815 ई० से 1822 ई० तक यूरोप की विभिन्न समस्याओं को सुलझाने के लिए अनेक सम्मेलन हुए, इसलिये इस युग को 'सम्मेलनों का युग (Era of Congresses) कहा जाता है। यूरोप की संयुक्त व्यवस्था के अन्तर्गत हुई संधियाँ निम्न प्रकार थी -

(i) एक्स-ला-शापेल का सम्मेलन (Congress of Aix-La-Chappelle) :-

प्रथम सम्मेलन अक्टूबर, 1818 ई० ~~को एक युद्ध मोर्चे को जिसमें यह तय किया गया~~ में एक्स-ला-शापेल नामक स्थान पर हुआ। इस सम्मेलन में फ्रांस ने मांग की कि क्योंकि उसने युद्ध हर्जाने की क्षतिपूर्ति कर दी थी, अतः उसे भी इस व्यवस्था का सदस्य बनाया जाये। उसकी इस मांग को स्वीकार कर लिया गया। इस प्रकार चतुर्मुखी के स्थान पर पंचमुखी संघ की स्थापना हुई। एक्स-ला-शापेल के सम्मेलन में निम्नलिखित प्रमुख समस्याओं पर विचार किया गया -

(i) डेनमार्क व स्वीडन की समस्या।
(ii) आस्ट्रिया व प्रशा के यहूदियों की समस्या
(iii) बेडन के उत्तराधिकार की समस्या

→

(iv) जर्मनी के 'हेस' नामक राज्य के राजा को (उत्तराधिकार) की समस्या।

(v) मोनको में अल्पसंख्यकों की समस्या।

उपरोक्त सभी समस्याओं का समाधान करने में यह सम्मेलन अत्यन्त सफल रहा। इसी कारण मेटरनिख ने कहा, "मैंने अपने जीवन में ऐसा सुन्दर सम्मेलन नहीं देखा था।"

(2) **ट्रोपाउ का सम्मेलन (Congress of Troppau)** :- यूरोप की संयुक्त व्यवस्था के अन्तर्गत अगला सम्मेलन ट्रोपाउ नामक स्थान पर अक्टूबर 1820 ई॰ में हुआ। इस सम्मेलन में आस्ट्रिया, रूस तथा प्रशा ने भाग लिया। इंगलैण्ड एवं फ्रांस ने इसमें भाग नहीं लिया था।

यह सम्मेलन मुख्यतया नेपिल्स की समस्या एवं विद्रोह को समाप्त करने के लिए हुआ था। इस सम्मेलन में इंगलैण्ड द्वारा भाग न लिये जाने के कारण मेटरनिख ने एक प्रतिक्रियावादी पूर्वलेख (Protocol) तैयार किया। 19 नवम्बर 1820 को इस Protocol को प्रशा व रूस ने भी स्वीकार कर लिया। इस Protocol में दो प्रमुख बातों की घोषणा की गई-

(i) "वे जनता के ऐसे सिद्धांत को मान्यता नहीं देंगे जो उस देश के शासक की शक्ति को कम करता है।"

(ii) "किसी राज्य में विद्रोह होने पर यदि उससे पड़ोसी राज्य को भी खतरा हो, तो पड़ोसी राज्य की सेना द्वारा उस विद्रोह का दमन करने का अधिकार होगा।"

(3) **लैबाख का सम्मेलन (Congress of Laibach)** :- नेपिल्स की समस्या पर विचार करने के लिए ही प्रमुखतया यह सम्मेलन जनवरी, 1821 ई॰ में हुआ। इस सम्मेलन में इंगलैण्ड के विरोध के पश्चात् भी आस्ट्रिया को सेना भेजकर इस विद्रोह को दबाने का अधिकार दे दिया गया। मार्च, 1821 ई॰ में आस्ट्रिया ने नेपिल्स व पीडमाण्ट के विद्रोहों का दमन कर दिया।

इस सम्मेलन में मेटरनिख अपने उद्देश्यों में सफल हो गया, किन्तु इंगलैण्ड द्वारा निरन्तर विरोध होने के कारण "संयुक्त व्यवस्था" के टूटने के लक्षण दृष्टिगत होने लगे।

(4) **वेरोना सम्मेलन (Congress of Verona)** :- 1822 ई॰ में इटली के प्रसिद्ध नगर वेरोना में अगला सम्मेलन हुआ। इस सम्मेलन के प्रारम्भ होने से पूर्व इंगलैण्ड का विदेश मंत्री कैनिंग बन चुका था। इस सम्मेलन के समक्ष प्रमुख समस्याएँ निम्नलिखित थीं-

(i) यूनान का स्वतंत्रता संग्राम,

(ii) स्पेन का विद्रोह

1821 ई॰ में यूनान ने टर्की के विरुद्ध विद्रोह

कर दिया। रूस यूनान की सहायता करना चाहता था, किन्तु इंगलैण्ड ने इसका इसका विरोध किया, क्योंकि ऐसा होने पर यूनान पर रूस का प्रभाव हो जाता। अतः यह समस्या हल न हो सकी।

दूसरी समस्या स्पेन की थी। फ्रांस तथा रूस स्पेन के शासक फर्डिनेण्ड सप्तम की सहायता करना चाहते थे, किन्तु लार्ड वैलिंगटन ने इसका घोर विरोध किया। इसके पश्चात् भी फ्रांस ने फर्डिनेण्ड की सहायता दी एवं विद्रोह को दबा दिया। इंगलैण्ड इससे अत्यंत क्षोभित हुआ और उसने स्पेन को कूटनीतिक व्यवस्था से अलग कर दिया।

एक अन्य समस्या स्पेन के अमेरिकी उपनिवेशों की थी। 1823 ई. में इन उपनिवेशों ने विद्रोह कर दिया। स्पेन पुनः उन पर अधिकार करना चाहता था, किन्तु इंगलैण्ड ने इसका विरोध किया। इसके अतिरिक्त उसने अमेरिका के राष्ट्रपति मुनरो को इस बात के लिए प्रोत्साहित किया कि वह घोषणा करे कि "अमेरिका अमेरिकन लोगों के लिए ही है। हम किसी यूरोपीय शक्ति का हस्तक्षेप दक्षिणी अथवा उत्तरी अमेरिका में सहन नहीं कर सकते।" अमेरिका के राष्ट्रपति की इस घोषणा को 'मुनरो सिद्धांत' (Monroe Doctrine) के नाम से जाना जाता है।

अमेरिका एवं इंगलैण्ड इस विषय में सहमत हो गये थे, अतः रूस, आस्ट्रिया एवं प्रशा कुछ न कर सके। अतः स्पेन के उपनिवेश स्वतंत्र हो गये।

S. V.
7.9.2020